सत्यनाम ।

कबीरदर्शन ग्रंथमालाकी द्वितीय मणिका।

अनुरागसागर ।

(४६) ग्रन्थोंद्वारा संशोधित ।

कबीरपन्थी ग्रंथोंके एक मात्र जीर्णोद्धारक,संशोधक,प्रकाशक, टीकाकार, कबीरधर्म नगरके वंशप्रतापी हजूरी महंत श्री युगलदासजी प्रसिद्ध रसीदपुरशिवहर-वाले भारतपथिक स्वामी युगलानन्दविहारी-द्वारा ४६ ग्रन्थोंसे संगृहीत.

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "**श्रीवेङ्कटेश्वर**" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रित कर प्रकाशित किया ।

संवत् १९८२, शक १८४७.